International Journal of Education and Science Research Review
Volume-11, Issue-2 March-April-2024 E-ISSN 2348-6457
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Impact Factor - 7.02 Email- editor@ijesrr.org

पश्चिमी उत्तर प्रदेश के उच्चतर माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि का मूल्यांकन

➢ शशी शर्मा, शोधकर्ती, ग्लोकल स्कूल ऑफ एजुकेशन ग्लोकल यूनिवर्सिटी, मिर्जापुर, सहारनपुर
➢ डॉ0 पूनम लता मिडडा, शोध निर्देशिका, प्रोफेसर, ग्लोकल स्कूल ऑफ एजुकेशन ग्लोकल यूनिवर्सिटी, मिर्जापुर, सहारनपुर

सार–

भारतवर्ष के उच्चतर माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण स्कूलों में अध्ययनरत् छात्रों की आयु 11–17 वर्ष तक होती है। अर्थात् आयु का वह काल जिसमें केवल चिन्गारी दिखाने की आवश्यकता होती है। इस अवस्था को किशोरावस्था के नाम से पुकारा जाता है। जिसके सम्बन्ध में स्टेनली हाल ने कहा है कि किशोरावस्था अत्यंत दबाव, तनाव तूफान, और संघर्ष की अवस्था है। इसीलिये उच्चतर माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण स्कूलों में अध्ययनरत् छात्रों की उर्जा उचित कार्यो में, समाज की सेवा में, देश की प्रगति में, देश की उन्नति में, तथा शिक्षा के प्रति शैक्षिक रुचि उत्पन्न करने मे तथा उनके व्यक्तित्व के विकास में प्रयोग की जा सकती है। उच्चतर माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण स्कूलों में अध्ययनरत् छात्रों की शैक्षिक रुचि को उनके व्यक्तित्व निर्माण मे कैसे लगाया जाय, जिससे वे देश की उन्नति में भागीदार बन सके। शोधार्थी ने इसी समस्या को आधार मानते हुए प्रस्तुत शोध के अंतर्गत शोध कार्य किया। इस शोध के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि छात्रो की शैक्षिक रूचि का उनके व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी) आयामों पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

प्रस्तावना–

शिक्षा किसी भी देश की विचारधारा तथा निर्माण करने में जितना अधिक योगदान देती है उतना कोई अन्य गतिविधित योगदान नहीं देती। किसी देश की प्रथम सीढ़ी शिक्षा होती है जिसे कोई देश यदि कुशलतापूर्वक पार कर लेता है तो वह अपने लक्ष्य तक पहुंच सकता है। यदि शिक्षा की नींव सुदृढ़ नहीं है तो शिक्षारूपी भवन की मजबूती पर प्रश्न चिन्ह लगा ही रहेगा। किसी देश की प्रगति का मूलाधार जनसाधारण या सभी व्यक्तियों की शिक्षा होती है।

अपने प्रारम्भिक काल में शिक्षा के केवल एक पक्षीय माना जाता था परन्तु धीरे–धीरे शिक्षा के सम्प्रत्य का विकास हुआ और अब शिक्षा अध्यापक केन्द्रित ना होकर बालक इसका प्रमुख केन्द्र बन गया है। आज बालक की रूचिए अभिरूचिए अभिवृत्तिए के अनुसार शिक्षा पर बल दिया जाने लगा है। यदि बालक की रूचिए के अनुसार शिक्षा प्रदान की जायेगी तो उससे बालक का सर्वांगीण विकास होगा और वे अपने जीवन को पूर्वक निर्वाह कर सकेंगे। आज के बदलते हुए परिवेश में शिक्षा द्वारा न केवल आध्यात्मिक विकास पर बल्कि भौतिक जीवन के लिए एवं अपने जीवन का अच्छी प्रकार निर्वाह करने के लिए व्यवसायिक शिक्षा पर बल दिया जाने लगा है। व्यवसायिक शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति अपना जीविकोपार्जन सही ढंग से कर पायेगा जिससे समस्त राष्ट्रीय आय में वृद्धि होगी और हमारा देश उन्नति कर सकेगा।

माध्यमिक शिक्षा–

माध्यमिक स्तर विद्यार्थी के बौद्धिक विकास के लिए परम आवश्यक है क्योंकि इस स्तर पर आकर ही विद्यार्थी की तर्क शक्ति का विकास हो पाता है। विद्यार्थी के लिए केवल प्राथमिक एवं उच्च स्तर की शिक्षा ही आवश्यक नहीं है वरन् माध्यमिक स्तर की शिक्षा भी उसके लिए अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि माध्यमिक स्तर पर ही विद्यार्थियों का सबसे अधिक बौद्धिक विकास होता है। माध्यमिक स्तर पर ही विद्यार्थी अपने भविष्य की नीवं का निर्माण करते हैं।

माध्यमिक शिक्षा शैक्षिक संरचना का सेतू है जिसके नीचे प्रारम्भिक शिक्षा एवं ऊपर उच्च शिक्षा के अन्तर्गत प्रायः 14 से 18 वर्ष के बालक तथा बालिकायें कक्षा 9 से 12 तक की शिक्षा प्राप्त करते हैं। कक्षा 9 व 10 को निम्न माध्यमिक तथा 11 व 12 को उच्चतर माध्यमिक स्तर के रूप में जाना जाता है।

व्यवसायिक शिक्षा–

माध्यमिक स्तर पर बालकों में तकनीकि कुशलता एवं क्षमता विकसित करने के लिए व्यवसायिक शिक्षा पर बल देना आवश्यक है। इससे उद्योगों एवं तकनीकी संस्थाओं में काम करने हेतु कुशल प्रशिक्षित व्यक्तियों की प्राप्ति हो सकेगी। देश में प्राकृतिक संसाधनों का अधिकाधिक उपयोग हो सकेगा, राष्ट्रीय आय में वृद्धि हो सकेगी तथा व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त व्यक्ति किसी एक व्यवसाय को सम्पादित करने के लिए तैयार हो जायेगा। अतः व्यवसायिक शिक्षा में यह प्रस्ताव रखा गया है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का 10 प्रतिशत सन् 1990 तक 25 प्रतिशत सन् 1995 तक व्यवसायिक पाठ्यचर्चा में शामिल हो सकेगे। माध्यमिक शिक्षा के व्यवसायीकरण हेतु एक केन्द्रीय योजना फखरी 1988 से त्रिपुरा, दमन और दीव, दादरा तथा नागर हवेली एवं लक्ष्यद्वीप को छोड़ कर सभी राज्यों में लागू की गयी है।

जिला स्तर से लेकर केन्द्रीय स्तर तक विभिन्न स्तरों के विभिन्न पहलूओं पर सूचना प्राप्त करने के लिए एक संगणकीकृत प्रबन्ध सूचना प्रणाली का विकास किया गया इस योजना में +2 व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त अधिकांश विद्यार्थियों को स्वरोजगार के अवसर प्राप्त करने की व्यवस्था की गयी है जो बैंकों से ऋण प्राप्त कर लघु उद्योग स्थापित कर सके।

व्यवसायिक शिक्षा व्यक्ति को किसी कार्य या व्यवसाय से सम्बन्धित प्राविधि प्रदान करती है ताकि वह उस व्यवसाय के द्वारा अपनी जीविका का उपार्जन कर सके।

समस्या का तर्काधार–

इस अध्ययन में यह आवश्यकता महसूस की गयी है कि उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि और माध्यमिक स्तर के ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि को तुलना करके ही ज्ञात किया जा सकता है। तुलनात्मक अध्ययन द्वारा ही यह ज्ञात किया जा सकता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण छात्र किस व्यवसाय की ओर प्रमुख रूप से रूचि रखते हैं। इस प्रकार इस शोध के अध्ययन का वर्तमान समय में बहुत अधिक महत्व है।

सम्बन्धित साहितय का सर्वेक्षण–

लिंडसे (1982) ने सात सौ इक्कीस छात्रों की कक्षा से सन्तुष्टि के मापन हेतु अध्ययन किया। अध्ययन में उन्होंने पाया कि (क) जो छात्र अन्तर्मुखी है वे अपनी कक्षा से अधिक सन्तुष्ट हैं। (ख) तथा वे विद्यार्थी जो कक्षा का वातावरण छात्र केन्द्रित पाते हैं, अधिक सन्तुष्ट हैं। विद्यार्थियों की शैक्षिक संतुष्टि पर लिंग का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। विद्यार्थी समूह कारक व्यक्तिगत विचारों से सार्थक रूप से सह–सम्बन्ध था। मानसिक स्वास्थ्य शैक्षिक सन्तुष्टि से सार्थक रूप से सह–सम्बन्ध था। इसी प्रकार शैक्षिक सह–सम्बन्ध शैक्षिक संतुष्टि से सम्बन्धित था।

फारिनो (1982) ने अध्ययन द्वारा शिक्षा की निरन्तरता से छात्रों का सन्तोष ज्ञात किया तथा शैक्षिक पृष्ठभूमि, आयु, उपस्थिति स्तर, रोजगार स्तर, वैवाहिक स्तर एवं लिंग नामक चरों एवं छात्र–सन्तोष के मध्य सम्बन्ध ज्ञात किया। अध्ययन हेतु दक्षिणी मिसीसिवी विश्वविद्यालय से 131 छात्रों के न्यायदर्श का चयन करके मापनी प्रशासिक की तथा समंको का विश्वलेषण करने पर पाया कि छात्र अत्यधि सन्तुष्ट थे।

बॉयड (1990) ने एक हजार विद्यार्थियों के न्यायदर्श का चयन करके सन्तुष्टि चरों का जनांकिक चरों से सम्बन्ध ज्ञात किया। अध्ययन में उन्होंने पाया कि 27 या 28 चरों पर उच्चस्तरीय सन्तुष्टि थी केवल एक सन्तुष्टि चर, कक्षा समयसारिणी, उच्चस्तरीय असन्तुष्टि पाई गई।

जिन्दल (1979) ने हरियाणा के महाविद्यालयों के विद्यालयी वातावरण से छात्रों के संतोष का सम्बन्ध ज्ञात करने हेतु अध्ययन किया। हरियाणा राज्य के विभिन्न महाविद्यालयों से 1850 विद्यार्थियों के प्रतिदर्श से प्राप्त समंकों के विश्लेषण से उन्होंने पाया कि छात्रों के दृष्टिकोण में एवं विद्यालयी वातावरण से सम्बन्धित विभिन्न पक्षों (विद्यार्थी, संकाय, प्रशासन आदि) के मध्य अत्यधिक अन्तर था छात्र दूसरे छात्रों एवं प्रशासन से अत्यधिक असन्तुष्ट थे। प्रत्येक छात्र अपने आपको आदर्शवादी छात्र समझता था तथा विद्यालय एवं विद्यालय वातावरण को अपने आदर्शें के अनुरूप नहीं पाता था। छात्र अपने विद्यालय के नियम एवं व्यवस्था से सहमत नहीं थे।

डी० कुमार (2006) ने स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित महाविद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्राध्यापकों को शिक्षण के प्रति अभिरूचि तथा शिक्षण निपुणता का तुलनात्मक अध्ययन किया। उन्होंने शोध अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला कि अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्राध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता। जबकि कुछ शिक्षण कौशल में स्वत्तिपोषित महाविद्यालयों के छात्राध्यापक एक दूसरे से श्रेष्ठ पाये गये।

प्रज्ञा शर्मा (2011) ने एम0एड0 पाठ्यक्रम में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक सन्तुष्टि एवं विद्यालयी वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन में इन्होंने पाया कि छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक सन्तुष्टि पाठ्यक्रम भौतिक सुविधा, परीक्षा प्रणाली, पुस्तकालय, शिक्षण विधि, सहपाठी समूह आयामों पर समान पायी गयी तथा पाठ्य सहगामी क्रियाओं व शिक्षक आयाम पर छात्रों की शैक्षिक सन्तुष्टि छात्राओं से अधिक पायी गयी। इन्होंने पाया कि शैक्षिक सन्तुष्टि पर विद्यालयी वातावरण का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

उद्देश्य –

किसी भी शोध को सही प्रकार से करने के लिए कुछ उद्देश्य निर्धारित किये जाते है प्रस्तुत लघु शोध के उद्देश्य निम्न है–

- यू0पी0 बोर्ड के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि की तुलना करना।
- सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि की तुलना कराना।
- आई0सी0एस0ई0 बोर्ड के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि की तुलना करना।
- यू0पी0 बोर्ड सी0बी0एस0ई0 बोर्ड तथा आई0सी0एस0ई0 बोर्ड के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि की तुलना करना।

परिकल्पनाः

किसी भी शोध के परिणाम ज्ञात करने के लिए परिकल्पनाएँ निर्धारित कर ली जाती है। प्रस्तुत शोध में शून्य परिकल्पना को प्रयोग किया गया है–

- यू0पी0 बोर्ड के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- आई0सी0एस0ई0 बोर्ड के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- यू0पी0 बोर्ड सी0बी0एस0ई0 बोर्ड तथा आई0सी0एस0ई0 बोर्ड के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि में कोई सार्थक अन्तर है।

शोध–विधि–

अध्ययन विधि का चयन समस्या की आवश्यकता एवं स्वरूप के अनुसार किया जाता है। प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या एवं न्यादर्श–

प्रस्तुत शोध में जनसंख्या के रूप में हापुड़ शहर के कक्षा बारहवी के यू0पी0 बोर्ड, सी0बी0एस0ई0 बोर्ड एवम् आई0एस0ई0 बोर्ड के 300 छात्रों को लिया जायेगा। न्यादर्श के रूप में सम्पूर्ण जनसंख्या (300) का 50: 300ध्2त्र150 होता है, को लिया जायेगा। न्यादर्श का चयन यदृिच्छक विधि से किया गया है।

आकड़ों का अर्थापन एवं विश्लेषण–

सारणी 1.1

यू0पी0बोर्ड, बोर्ड के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि की तुलना

क्र.सं.	समूह का नाम	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक मान	सार्थकता स्तर
1.	शहरी	25	91.48	17.67	1.83	सार्थक
2.	ग्रामीण	25	103.72	18.03		

0.05 स्तर

0.01 स्तर

सारणी संख्या 1.1 में उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत यू0पी0 बोर्ड के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि की तुलना टी–माने के रूप में की गयी है। प्राप्त टी–मान 1.83 है जो सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं और न ही 0.01 स्तर पर है क्योंकि 48 स्वतंतत्रांश के लिए टी सारणी में 0.05 स्तर पर दिया गया टी–मान 2.01 है और 0.01 स्तर पर दिया गया टी–मान 2.68 से कम है। अतः कहा जा विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता, दोनों ही विद्यार्थी व्यवसाय के प्रति रूचि रखते है। यद्यपि शहरी विद्यार्थियों में व्यवसायिक रूचि का माध्य 91.49 है जो ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि के माध्यम 103.72 से कम है, लेकिन व्यवसायिक रूचि के माध्यमानों का अन्तर वास्तविक नहीं है। मापन की त्रुटियों के कारण है। शोध साहित्य के पुनरावलोकन में शोधार्थियों को कोई ऐसा शोध अध्ययन नहीं मिला जिसमें उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत यू0पी0 बोर्ड के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि की तुलना की गयी है। अतः कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक विद्यालियों में अध्ययनरत यू0पी0बोर्ड के शहरी विद्यार्थी व्यवसाय के प्रति जितने सजग है उतने ही यू0पी0बोर्ड के ग्रामीण विद्यार्थी भी।

सारणी 1.2

सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि की तुलना

क्र.सं.	समूह का नाम	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक मान	सार्थकता स्तर
1.	शहरी	25	110.96	19.63	0.12	सार्थक नहीं है।
2.	ग्रामीण	25	110.36	13.96		

0.05 स्तर

0.02 स्तर

0.03 सारणी संख्या 1.2 में उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि की तुलना टी–माने के रूप में की गयी है। प्राप्त टी–मान 0.12 है जो सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं और न ही 0.01 स्तर पर है क्योंकि 48 स्वतंतत्रांश के लिए टी सारणी में 0.05 स्तर पर दिया गया टी–मान 2.01 है और 0.01 स्तर पर दिया गया टी–मान 2.68 से कम है। प्राप्त टी–मान 2.01 है और 0.01 स्तर पर दिया गया टी–मान 2.68 से कम है। अतः कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। यद्यपि शहरी विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि का माध्य 110.96 है जो ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि का माध्य 110.36 से अधिक है लेकिन व्यवसायिक रूचि के मध्यमानों का अन्तर वास्तविक नहीं है। यह मापन की त्रुटियों के कारण है। शोध साहित्य के पुनरावलोकन में शोधार्थियों को कोई ऐसा शोध अध्ययन नहीं मिला जिसमें उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत यू0पी0 बोर्ड के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि की तुलना की गयी है। अतः कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक विद्यालियों में अध्ययनरत यू0पी0बोर्ड के शहरी विद्यार्थी व्यवसाय के प्रति जितने सजग है उतने ही यू0पी0बोर्ड के ग्रामीण विद्यार्थी भी।

सारणी 1.3

आई0सी0एस0ई0 बोर्ड के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि की तुलना

क्र.सं.	समूह का नाम	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक मान	सार्थकता स्तर
1.	शहरी	25	129.84	11.79	1.47	सार्थक नहीं है।
2.	ग्रामीण	25	111.89	11.89		

0.05 स्तर

0.01 स्तर

सारणी संख्या 1.3 में उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत यू0पी0 बोर्ड के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि की तुलना टी–माने के रूप में की गयी है। प्राप्त टी–मान 1.47 है जो सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं और न ही 0.01 स्तर पर है क्योंकि 48 स्वतंतत्रांश के लिए टी सारणी में 0.05 स्तर पर दिया गया टी–मान 2.01 है और 0.01 स्तर पर दिया गया टी–मान 2.68 से कम है। प्राप्त टी–मान 1.47 न्यूनतम सार्थक टी–मान 2.01 और 2.68 से अधिक है। अतः कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत आई0सी0एस0ई0 बोर्ड के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। यद्यपि शहरी विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि का माध्य 129.84 है जो ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि का माध्य 111.48 है। दोनों माध्यों में जो अन्तर है वह वास्तविक है मापन की त्रुटि के कारण नहीं है।

शोध साहित्य के पुनरावलोकन में शोधार्थियों को कोई ऐसा शोध अध्ययन नहीं मिला जिसमें उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत आई0सी0एस0ई0 बोर्ड के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि की तुलना की गयी है। अतः कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक विद्यालियों में अध्ययनरत यू0पी0बोर्ड के शहरी विद्यार्थी व्यवसाय के प्रति जितने सजग है उतने ही आई0सी0एस0ई0 बोर्ड के ग्रामीण विद्यार्थी भी।

सारणी 1.4

यू0पी0 बोर्ड सी0बी0एस0ई0 बोर्ड एवं आई0सी0एस0ई0 के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि की तुलना

क्र.सं.	समूह का नाम	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक मान	सार्थकता स्तर
1.	शहरी	75	111.76	22.08	0.68	सार्थक नहीं है।
2.	ग्रामीण	75	109.65	15.41		

0.05 स्तर

0.01 स्तर

सारणी संख्या 1.4 में उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत यू0पी0 बोर्ड के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि की तुलना टी–माने के रूप में की गयी है। प्राप्त टी–मान 0.68 है जो सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं और न ही 0.01 स्तर पर है क्योंकि 148 स्वतंतत्रांश के लिए टी सारणी में 0.05 स्तर पर दिया गया टी–मान 1.89 है और 0.01 स्तर पर दिया गया टी–मान 2.60 से कम है। प्राप्त टी–मान 1.98 है और 2.60 स्तर पर दिया गया टी–मान 2.68 से कम है। अतः कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत यू0पी0 बोर्ड सी0बी0एस0ई0 बोर्ड एवं आई0सी0एस0ई0 के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। यद्यपि शहरी विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि का माध्य 111.76 है जो ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि का माध्य 109. 65 से अधिक है लेकिन व्यवसायिक रूचि के मध्यमानों का अन्तर वास्तविक नहीं है। यह मापन की त्रुटियों के कारण है।

शोध साहित्य के पुनरावलोकन में शोधार्थियों को कोई ऐसा शोध अध्ययन नहीं मिला जिसमें उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत यू0पी0 बोर्ड के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि की तुलना की गयी है। अतः कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक विद्यालियों में अध्ययनरत यू0पी0बोड एवं आई0सी0एस0ई0 बार्ड के शहरी विद्यार्थी व्यवसाय के प्रति जितने सजग है उतने ही यू0पी0बोर्ड, सी0बी0एस0ई0 बार्ड के ग्रामीण विद्यार्थी भी।

निष्कर्ष–

प्रस्तुत अध्ययन द्वारा यह पता लगाया जा सकता है कि उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विभिन्न बोर्डों के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यवसायिक शिक्षा की अभिरूचि के स्तर क्या है? अतः प्राप्त निष्कर्ष परीक्षा रूप से व्यवसायिक शिक्षा के बारे में अभिरूचि विकास हेतु कार्य योजना के लिए सुझाव प्रस्तुत करते है। प्राप्त निष्कर्ष माध्यमिक विद्यालयों में व्यवसायिक शिक्षा को पाठयक्रम में सुनिश्चित करते हुए शिक्षकों के इस विषय के दायित्व को प्रतिपादित करते है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

- कुमारी अंजनी (2011) लघु शोध प्रबंध, एम.एड. शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ, शैक्षिक लघु शोध संकलित (20011–12) राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, रायपुर छत्तीसगढ़''।
- द्विवेदी निधि, (2011–12), लघु शोध प्रबंध, एम. एड.शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़'' व्यावसायिक शिक्षा के अंतर्गत बेकरी एवं कंफेशनरी और फल एवं सब्जी परिरक्षण पाठ्यक्रम में अध्ययनरत छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि, अभिरूचि एवं उनके स्वरोजगार की संभावनाओं का अध्ययन।''
- भटनागर ए0बी0 भटनागर मीनाक्षी–मनोविज्ञान शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन–आर लाल बुक डिपो मेरठ।
- पाण्डेय बी0बी0–भारतीय शिक्षा का इतिहास और सामायिक समस्याएँ–वसुन्धरा प्रकाशन गोरखपुर।
- शर्मा आर0ए0 शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया–आर लाल बुक डिपो मेरठ।
- स्वरूप एवं सक्सैना–शिक्षा सिद्धान्त।
- डहरिया जे.आर.(2008–09) लघु शोध प्रबंध एम. एड. शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ+2 स्तर पर अध्ययनरत सामान्य एवं व्यावसायिक पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों में आत्मसंप्रत्यय एवं व्यावसायिक अभिवृत्ति के अंतर्संबंधों का तुलनात्मक अध्ययन।
- डोनगांवकर निशा(2010) लघु शोध प्रबंध, एम.एड. शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ शैक्षिक लघु शोध संकलित (2009–10) राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, रायपुर छत्तीसगढ़ ''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का उनकी व्यावसायिक अभिवृत्ति के संदर्भ में अध्ययन। ''
- वर्मा आर0के0 श्रीमति–भारत में शैक्षिक प्रणाली का इतिहास एवं विकास–राधा प्रकाशन मन्दिर मेरठ।